U.P. NON-OLYMPIC ASSOCIATION

FOR PROMOTING TRADITIONAL, ANCIENT SPORTS & CULTURE

Recognized by Government of U.P.
Registered Under Society Registration Act, 1860
Affiliated to Traditional, Ancient & Non Olympic Sports Association of India- TANSAI

UPNOA

PRESIDENT
Ajay Deep Singh
IAS (RETD.)

GENERAL SECRETARY
A. K. Saxena
Advocate

प्रेस नोट

उ0प्र0 नॉन ओलम्पिक एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री अजय दीप सिंह आई.ए.एस (से0नि0) द्वारा ए0के0 सक्सेना जनरल सेक्रटरी UPNOA के नेतृव्य में गठित थारू क्षेत्र के परम्परागत खेलों हेतु अध्ययन दल गठित किया था। पाँच सदस्यी टीम में जी.पी.त्रिपाठी, कृष्ण अवतार गुप्ता, डॉ सफीक तथा सुनील सिंह तोमर रहे। सर्वप्रथम टीम ने मुख्य विकास अधिकारी खीरी के साथ बैठक की। मुख्य विकास अधिकारी खीरी श्री अनिल कुमार सिंह ने पलिया विकास खण्ड के अन्तर्गत थारू जनजाति (आदिवासी) क्षेत्र में थारू बच्चों द्वारा खेलें जाने परम्परागत खेलो के अध्ययन हेतु टीम को पूरा सहयोग प्रदान किया। उनके द्वारा बी0डी0ओ0 पलिया, परियोजना अधिकारी, थारू जनजाति तथा एस.डी.एम पलिया को सहयोग करने हेतु निर्देशित किया गया।

अध्ययन दल के अध्यक्ष ए0के0 सक्सेना जनरल सेक्रेटरी उ0प्र0 नॉन ओलम्पिक एसोसिएशन ने दो दिवसीय अध्ययन दौरे के बाद आज बताया कि उनकी टीम ने पलिया विकास खण्ड के थारू जनजाति के ग्राम पंचायत घुरकिया, बरबटा, पोया, पचपेड़ा, सौनहा, गोबरौला एवं सरियापारा में थारू क्षेत्र के बच्चो द्वारा खेलें जाने निम्नलिखित परम्परागत खेलो व उनकी संस्कृति का अध्ययन भली भाँति किया :- मारिक मरौघा गीनार, डेग – डेपु, त्यौरा, गोटी, दो लकड़ी का डेगा, तीरन्दाजी, पारो, लदछे डाडी, गुच्चा, सिकटी, बप्पल चोर, चुंगी, दुर, छतोई(पुराना परिधान), डलिया बुनने की कला तथा थारू नृत्य। टीम ने इन ग्रामो में उपरोक्त खेलों को बच्चो, बुर्जुगो व महिलाओं द्वारा खेल खिलवाकर देखा और रात में चौपाल भी लगायी। थारू जनजाति के परम्परागत उक्त खेलों के सभी नियमों को लिपिबद्ध करके उनकी एक किताब प्रकाशित की जायेगी। थारू क्षेत्र के बालको में टीम के पहुँचाने पर अपार उत्साह देखने को मिला। यहाँ के बच्चे देश के लिए मेडल भी ला जा सकते है। जनजाति पलिया के परियोजना अधिकारी श्री यू.के सिंह ने भी अपने कार्यालय में हमारी टीम के साथ सभी ग्राम पंचायतों के प्रधानों की बैठक भी करायी।

उ0प्र0 नॉन ओलम्पिक एसोसिएशन का उद्देश्य थारू जनजाति के पुराने प्रचलित स्वदेशी खेलों, लोककला एवं विधाओं के अस्तित्व को लुप्तप्राय होने से बचाना है और उन्हें लोकप्रिय बनाकर एवं इन खेलों की प्रतियोगिता कराके उनके खिलाड़ियो को राष्ट्रीय दर्जा प्रदान करके देश की मुख्य धारा में जोड़ना है। अभी तक किसी खेल संघ या सरकार का ध्यान इस ओर नही गया है। UPNOA देश में प्रथम बार आदिवासी थारू जनजाति के परम्परागत खेलों और विधाओं की उन्हीं के क्षेत्र में दो दिवसीय राज्यस्तरीय प्रतियोगिता माह अक्टूबर नवम्बर –2022 में करायेगी तथा इसके लिए इन खेलों के खिलाड़ियों को उनके ही परिवेश में तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित करेगी ताकि उनकी खेल व विधाओं की तरफ सभी का ध्यान आकर्षित किया जा सके और थारू क्षेत्र के खेलों व उनकी विधाओं को लुप्त होने से बचाया जा सकें।

ए.के.सक्सेना
जनरल सेक्रेटरी
9452832324

सेवा में,
समस्त सम्पादक / संवाददाता।
दैनिक समाचार पत्र

Phone President: 011-24638206, 91 9711000099, e-mail- drksips78@yahoo.co.in, drkashmirsingh@hotmail.com
General Secretary
HEAD OFFICE: R-16, Nehru Enclave, Gomti Nagar, Lucknow (U.P.) 0522-2411349, M-9335903019

Scanned with CamScanner

थारू जनजाति के परम्परागत लोकप्रिय प्रचलित खेल एवं नृत्य
विकास खण्ड पलिया–खीरी

20-21-22 जुलाई 2022

अध्ययन दल की रिर्पोट

प्रस्तुतकर्त्ता

ए.के. सक्सेना, जनरल सेक्रेटरी
जी. पी. त्रिपाठी, कृष्णावतार गुप्ता
सुनील सिंह तोमर, डॉ शफीक

अध्ययन दल की रिर्पोट

थारू जनजाति में खेले जाने परम्परागत खेल व लोक विधायें

उ0प्र0 नॉन ओलम्पिक एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री अजय दीप सिंह आई.ए.एस. (से0नि0) द्वारा 10 जुलाई 2022 को जनपद लखीमपुर खीरी के पलिया विकास खण्ड क्षेत्र में थारू जनजाति (आदिवासी) के परम्परागत खेलों व उनकी लोक विधाओं के अध्ययन के लिए मेरी अध्यक्षता में

5 सदस्यीय टीम का गठन किया गया जिसमें **श्री जी.पी. त्रिपाठी, श्री कृष्णावतार गुप्ता, श्री सुनील सिंह तोमर तथा डा.शफीक** को चयनित किया गया।

दिनांक 20–07–22 को टीम सभी सदस्यों ने कार द्वारा जनपद लखीमपुर खीरी को प्रातः 7 बजे प्रस्थान किया।

मुख्य विकास अधिकारी –खीरी महोदय के साथ बैठक :–

टीम के सभी सदस्य लखीमपुर –खीरी पहुंच कर मुख्य विकास अधिकारी –खीरी श्री अनिल कुमार सिंह महोदय से मिलने गये। सी.डी.ओ महोदय द्वारा तुरन्त टीम के साथ बैठक की। UPNOA की कैप पहनाकर सी.डी.ओ साहब का स्वागत किया गया। एसोसिएशन का नोट पैड व ब्रोशर सी.डी.ओ सर दिया गया।

सी.डी.ओ –खीरी द्वारा UPNOA की अध्ययन टीम को पूरा सहयोग प्रदान किया गया। बैठक में ही सी.डी.ओ. सर ने एस.डी.एम, बी.डी.ओ. व परियोजना अधिकारी पलिया को सहयोग देने हेतु फोन किया।

बैठक सम्माप्ति के बाद अध्ययन दल लगभग 12 बजे कार से पलिया के लिये प्रास्थान कर दिया।

बी.डी.ओ. पलिया के साथ बैठक :–

दिनांक – 20/7/22 को बी.डी.ओ. पलिया श्री अरूण कुमार सिंह के 2.30 बजें बैठक सम्पन्न हुई जिसमें उन्होनें अध्ययन दल के साथ दो ग्राम पंचायत अधिकारी श्री चन्द्रशेखर तथा श्री बलराम राना को लगा दिया। उसके साथ अध्ययन दल सर्वप्रथम चन्दन चौकी गया।

परियोजना अधिकारी पलिया के साथ बैठक :–

थारू जनजाति 20/7/22 को ही अध्ययन दल ने परियोजना कार्यालय चन्दन चौकी में श्री यू. के. सिंह परियोजना अधिकारी के साथ बैठक की। श्री यू.के. सिंह जी द्वारा सी.डी.ओ. महोदय ने निर्देश पर पहले ही थारू क्षेत्र के सभी प्रधानों की बैठक बुला ली थी।

बहुत ही सौहार्द पूर्ण वातावरण में सभी प्रधानों से थारू जनजाति के पारम्पारिक खेलों व उनकी संस्कृति/लोक विधाओं की जानकारी प्राप्त की गई तथा आगामी दो दिनों का विभिन्न ग्राम पंचायतों में अध्ययन का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। सभी प्रधानों को आश्चर्य व खुशी हुई कि उनके पारम्पारिक खेलो/विधाओं के अध्ययन के लिये हमारी टीम उनके ग्रामों में पहली बार आई है।

अध्ययन दल द्वारा 20/7/22 को एक ग्राम तथा 21/7/22 को छः ग्रामों में जाकर विधिवत् थारू जनजाति पारम्परिक खेलों का अध्ययन किया तथा निम्नलिखित ग्रामों में उनके पारम्परिक खेलों उन्हीं के परिवेश मे खिलवा कर देखा। सभी 17 खेलों के खेलने के नियम भी वही लिपिबद्ध किए ताकि थारू जनजाति के खेलों के नियम की एक किताब बनवाई जा सकें।

सम्पर्क किए गये ग्रामों के नाम इस प्रकार है :–

1. धुसकिया
2. बरबटा
3. पोया
4. पचपेड़ा
5. सौनहा
6. गोबरौला
7. सरिया पारा

मुख्य सहयोगी :–

श्री अरूण कुमार सिंह बी.डी.ओ. पलिया
श्री यू. के. सिंह परियोजना अधिकारी
अध्ययन दल के समस्त सम्मानित सदस्य
श्री चन्द्रशेखर ग्रा0प0अ0
श्री बलराम राना ग्रा.प0अ0
श्री छैल बिहारी राना,प्रधान संघ के अध्यक्ष, पिपरौला
श्री लक्ष्मण प्रसाद, प्रधान प्रतिनिधि, परसिया
सुश्री शिवकुमारी, धुसकिया
समस्त प्रधान थारू जनजाति
विकास खण्ड के एकाउन्टेन्ट श्री राना
थारू जनजाति का रोजगार सेवक श्री कमलेश, बरबटा
श्री राम किशन, बरबटा

आभार :–

मुख्य विकास अधिकारी –खीरी महोदय

UPNOA का मिशन

उ0प्र0 नॉन ओलम्पिक एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री अजय दीप सिंह आई.ए.एस (से.नि.) महोदय ने माह सितम्बर/अक्टूबर–22 में थारू क्षेत्र में ही एक दिवसीय उनके परम्परागत खेलों की प्रतियोगिता करानें की घोषणा भी की और यह भी निर्देश दिया कि प्रतियोगिता के पूर्व थारू जनजाति के क्षेत्र में जाकर उनके परम्परागत खेलों/विधाओं की टीम बनवाने व इन खेलों को भलीभति आयोजित करने हेतु 3 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा। थारू जनजाति के खेलों के रूल्स की एक किताब भी शीघ्र ही प्राकशित करायी जाये। संलग्नक :–

ए.के. सक्सेना
अध्यक्ष, अध्ययन दल
जनरल सेक्रेटरी
उ0प्र0 नॉन ओलम्पिक एसोसिएशन
9452832324

प्रतिलिपि :–

1. **माननीय मुख्यमंत्री जी उ0प्र0 सरकार, लखनऊ**
2. श्री अजय दीप सिंह आई.ए.एस. (से0नि0) अध्यक्ष उ0प्र0 नॉन ओलम्पिक एसोसिएशन
3. निदेशक जनजाति विकास विभाग, उ0प्र0
4. निदेशक संस्कृतिक विभाग, उ0प्र0

थारू जनजाति के सम्बन्ध मे आवश्यक सूचानयें

उ0प्र0 में थारू जनजाति बहुल्य जनसंख्या जनपद लखीमपुर खीरी विकास खण्ड पलिया में है। जहाँ थारू जनजाति की 22 ग्राम पंचायतें है। जनपद लखीमपुर खीरी मुख्यालय के इन थारू जनजाति की ग्राम पंचायतों की दूरी लगभग 120 किलोमीटर है। थारू जनजाति की सभी ग्राम पंचायत (विकास खण्ड पलिया– खीरी) भारत नेपाल सीमा पर स्थित हैं।

ग्राम पंचायत का नाम		जनसंख्या
1. धुसकिया	–	2283
2. बरबटा	–	1347
3. पोया	–	2397
4. सौनहा	–	1593
5. सरिया पारा	–	1124
6. पचपेड़ा	–	1689
7. परसिया	–	2999
8. चन्दन चौकी	–	2092
9. ध्यानपुर	–	2353
10. रामनगर	–	1319
11. पुरैना	–	1241
12. ढखिया	–	2316
13. मसानखम्भ	–	1019
14. पिपरौला	–	1747
15. निझोटा	–	1714
16. देवराही	–	1188
17. सूड़ा	–	1670
18. सिगहिया	–	2926
19. छेदियापूरब	–	2547
20. बनकटी	–	1611
21. भूड़ा	–	1330
22. कजरिया	–	2018
23. सूरमा (गोबरौला)	–	

सभी उपरोक्त 23 ग्राम पंचायतों में प्राथमिक विद्यालय बने हुए है और जिनमें थारू जनजाति के बच्चे काफी संख्या में पढ़तें है।

थारू क्षेत्र के चन्दन चौकी में CHC, थारू जनजाति परियोजना कार्यालय एवं आश्रम पद्धति विद्यालय स्थित हैं।

ग्राम पंचायत सौनहा में एकलव्य आवासीय विद्यालय भी है।

थारू क्षेत्र के परप्परागत लोकप्रिय खेल

1. मारिक मरोहा
2. मीनार (पिरामिड)
3. डेम – डेपु
4. तुइरा (सुरबग्घी)
5. गोटी (गुट्ठक)
6. दो लकड़ी का डेगां
7. तीरन्दाजी
8. गुलेल
9. पाँसे (चौपड़)
10. लक्ष्छे डाडी (लपटू डंडा की तरह)
11. अट्टी डंडा (गिल्ली डंडा)
12. गुच्चा (कंचां)
13. सिकटी (गिप्पल)
14. एकसरा बोल्टू
15. चप्पल चोर
16. चुंगी
17. टुरर

18. **लोक कला व लोक विधायें**

थारू नृत्य
डलिया बुनना
छतोई (बुलट प्रुफ कपड़ा) /पुराना पहनावा

थारू जनजाति के परम्परागत लोकप्रिय खेल एवं नृत्य

गोटी (गुट्टक)

- यह एक ग्रामीण पारंपरिक बहु प्रचलित खेल है जिसे दो या चार महिलाओं के द्वारा इकट्ठे होकर खेला जाता है। यह खेल 5 पत्थर की गोटियों के द्वारा खेला जाता है, जिसमे क्रमशः भिन्न भिन्न बदलाव करते हुए खेल को कठिन से कठिनतम स्तर पर ले जाते है। इसका मुख्य आधार एक हाथ से गोटियो को उछालकर उसी हाथ पर गोटियें का सन्तुलन बनाते हुये अपने नियंत्रण में लाना होता है जिसका नियंत्रण टूट जाता है वही हारा माना जाता है।
- इस खेल में 5 छोटे पत्थर की गोटियां होती है।
- इस खेल को समूह बनाकर या एक–एक अथवा दो पक्ष बनाकर खेला जाता है।
- इसमें सात स्टेप होते है। (इक्कड, सिक्कड, तिक्कड, उल्टी, सूधी, थप्पा और आखरी स्टेप मंधा) होता है।
- इक्कड में पांच गोटी को जमीन पर डाला जाता और फिर उसी में से एक गोटी उठाया जाता है उस गोटी को ऊपर उछाला जाता है। उसी समय में नीचे से एक गोटी ऊछालकर फिर उछली हुयी गोटी को उसी हाथ से पकड़ा जाता हैं।
- इस प्रकार जो बच्चा सातों स्टेप पार कर लेता हैं वही विजयी हो जाता है।

तुइरा (सुरबग्घी)

- यह शतरंज की तरह का एक दिमागी खेल है। इसमें धैर्य और दिमाग के सन्तुलन की आवश्यकता होती हैं।
- यह चौकोर बना होता है। इसमें 25 खाने चौकोर में बने होते है।
- इसमें दो मलैया (तिरछा, तीन कोन की) चौकोर से बनी होती है। और इसमें 10–10 खाने होते है।
- यह दो पक्ष में खेला जाता है। एक पक्ष के पास 22 गोटियाँ होती हैं।
- दोनों पक्षों के पास अलग अलग 2 रंग की गोटी होती है।
- खेल/चाल शुरू होने से पहले बीच का खाना खाली छोड़ा जाता हैं।
- जो पहले चलेगा वह उसी खाली खाने पर गोटी चलता हैं।
- इसमे गोटी एक खाने को छोड़कर चली जाती हैं।
- जिसकी सारी गोटी पहले मर जाती है वह हार जाता हैं।

एकसरा बोल्टू

- इस खेल को बच्चे बहुत उल्लास से खेलतें है।
- इस खेल में अनगिनत बच्चे होते हैं।
- एक बच्चा चोर बनता हैं।
- चेार बच्चा घुटने पर हाथ रखकर कमर से नीचे झुका होता है और बाकी बच्चे चोर बच्चे के पीठ पर हाथ रखकर उपर से पार करते है उसी समय वह कविता भी गाते हैं।
- वे बच्चें एक से 20 तक गिनती के साथ कविता भी गाते हैं।
- जो बच्चा चोर के ऊपर से पार करता है उसके हाथ के अलावा कोई अंग चोर को नहीं छूना चहिए यदि छू गया तो वहीं बच्चा अगला चोर बनेगा।

गुच्चा व कंचा

- यह खेल तीन प्रकार से खेला जाता है :–
- **आयताकार खाना** – एक सीधी लाइन मे कन्चों को आयताकार खानें में रखकर खेला जाता है। इसमें कुछ दूरी से बैठकर उंगलियों की सहायता से निशाना लगाकर कन्चों को निशाना बनाते है और आयत से बाहर निकालने का प्रयास करते हैं बाहर आने पर वह कंचा स्ट्राइकर का हो जाता है और इस प्रकार धीरे – धीरे सभी कंचो को आयात से बाहर आने पर खेल समाप्त हो जाता है जिसके पास अधिक कंचे होते है वहीं विजेता घोषित होता हैं।
- **गोलाकार** – इसमें एक कंचा राजा के रूप में मध्य में रखकर शेष कंचे एक गोलाकार घेरे में उसके चारो और रख दिये जाते है और एक ओर निर्धारित दूरी पर एक बडी लाइन खींच दी जाती हैं। अब गोल घेरे के पास से खडे होकर सभी खिलाड़ी क्रमशः उँगली के सहारे से कंचा लाइन के अधिकाधिक समीप फेकने का प्रयास करते है। जिसका कंचा लाइन के सबसे करीब होगा पहला स्ट्रोक उसे ही दिया जायेगा लाइन से कंचे की दूरी ही स्ट्राइकर का क्रम निर्धारित करेगी। अब लाइन पर बैठकर अगुली के सहारे केन्द्र में रखे राजा रूपी कंचे को जो खिलाड़ी मारकर गोलाई में रखे कंचो को छूए बिना गोले से बाहर निकाल देगा वह जीत जायेंगा परन्तु यदि गोले में रखे कंचो में किसी का स्ट्राइकर अथवा राजा छू गए तो फाउल माना जायेंगा।
- **गुच्ची बनाकर** – इसमें एक गुच्ची यानी छोटा गड्डा बनाते और कम से कम 5 फिट दूरी लाइन खींच कर प्रतिभागी खड़े होते है और नम्बर वाइज हाथ में 10 कंचे लेकर गुच्ची की तरफ उछाला जाता है। जिसके कंचे सबसे ज्यादा गुच्ची में चले जाते है वही विजेता होता है अथवा इसी खेल में लाइन पर खड़े होकर यही 10 कंचे गुच्ची की तरफ उछालते है। सभी प्रतिभागी अपने– अपने नम्बर आने पर लाइन पर खड़ें होकर हाथ से निशाना लगाते है। एक प्रतिभागी को दो चांस मिलते है और जो खिलाड़ी दोनों चांस में लाइन पर खड़े होकर हाथ से निशाना लगाकर जो दो कंचो को लगातार हिट कर देता है वही विजेता माना जाता है।

सिक्टी (गिप्पल)

- एक निश्चित प्रकार के आकार की फील्ड बनाई जाती है जिसमें आयताकार दो मेल के खानें बनते है ऊपर वाला खाना 3 भाग मे रेस्टिंग जोन के रूप में होता है। नीचे वाला खाना क्रास खाना प्वाइन्ट जोन होता हैं जिसमें जाते समय गिप्पल हाथ से रेस्टिंग जोन के आगे फेकते हैं और वापसी में पैर की ठोकर से प्वाइन्ट जोन में डालते है जिस नम्बर के खाने में गिप्पल जाता हैं उसी जोन मे लिखें उतने ही प्वाइन्ट मिलतें हैं और गिप्पल एक पैर से ठोकर मारते हुए खिसका कर बाहर लातें हैं, जिसके ज्यादा प्वाइन्ट होते है वही विजेता रहता है।

तीरंदाजी

- पारम्परिक बाँस से बने धनुष पर बाँण चढ़ाकर निर्धारित लक्ष्य पर सटीक निशाना लगाना विजय का आधार बनाता है। यह बाँस की पतली खपाची को मोंड कर बनाया जाता हैं जिसे धनुष कहते हैं धनुष पर पतली लकड़ी की तीर होती है। यह खेल द्वापर व त्रेता युग से खेला जाता हैं। इस प्राचीन खेल में धैर्य व सटीक निशाना साधने की कला को परखा जाता है। यह एक यौगिक क्रिया भी हैं इसमें आँख व हाथ की शक्ति व सन्तुलन का समन्वय रखना पड़ता है।

गुलेल

- इसमें चिकनी मिट्टी से गोल–गोल गोलिया बनाकर निर्धारित लक्ष्य साधने को आधार मानकर अधिकतम अंक प्राप्त करने पर विजय घोषित होती है। दो गोल लकड़ियों के टुकड़े को रबड़ से बांधकर वी शेप में तैयार किया जाता हैं। वी के ऊपरी हिस्से में आधी इंची टायर की लम्बी रबड़ का प्रयोग होता हैं, जिसे खींचकर लक्ष्य पर निशाना साधा जाता हैं। कुछ बच्चे इसमें गोली के रूप में कंचे का प्रयोग करते है। लक्ष्य कम से कम 25 फुट की दूरी पर रखा जाता है।

मिनार (पिरामिड)

- यह खेल हर आयु वर्ग के लिये खेला जाने वाला एकाग्रता और सन्तुलन बनाते हुये मानव पिरामिड बनाने का खेल हैं। यह अधिकतम पाँच मंजिल उचाँई (स्टोरी) का हो सकता हैं। इसमें नीचे बड़े 5–7 बच्चे खड़े रहते हैं और उसके कम वेट वाले छोटे बच्चे विषम संख्या में एक के ऊपर एक खड़े हो जाते है। इसमें अधिकतम ऊचाँई का पिरामिड बनाने वाला ग्रुप जीतेंगा।

डेम

- यह खेल बालक बालिकाओं द्वारा बड़े ही उत्साह से खेला जाता है। खेल में दो पक्ष होते हैं। एक पार्टी सिंगल ईटों को एक दूसरे पर रख विकेट बनाया जाता हैं इसे डेम कहते हैं। बनाए गए कृत्रिम गेंद से निशाने पर मारकर उसे गिराने का प्रयास करतें हैं। कृत्रिम रूप से पुराने मोजे, कपड़ा आदि से बनाई गई गेंद, जिसका वजन लगभग 200 ग्राम होता हैं, से निशाना लगाते है। निशाना लगाकर लक्ष्य को गिराने वाली पार्टी गेंद से बचते हुए भागती है और निशाने को पुनः स्थापित करने का ऐसा प्रयास करती है कि विपक्षी दल इस पार्टी को गेंद से न मार पाये। पहला पक्ष डेम बनाने का प्रयास करता है और दूसरा पक्ष डेम बनाने से पहले पहले दल के सदस्यों को बाल मार कर आउट करने का प्रयास करता। इसी मध्य यदि पहला पक्ष डेम बना लेता है तो उसकी जीत होती है।

टुरर

- यह खेल डण्डा और पुरानी रबर की गिप्पल से खेला जाता है। इसमें कुछ बच्चें एकत्रित हो कर डण्डा रखते है और एक चोर को चुनते है। वह रबर की गिप्पल या जूते की रबड़ अपने हाथ में लेकर बच्चों को मारेगा। जिसे गेंद (रबड़ की गिप्पल) लग गई अगला चोर वहीं होगा। साथ ही चोर के अलावा सभी खिलाड़ी डण्डे से गिप्पल चोर की पकड़ से दूर रहनें का प्रयास करते हैं। इस प्रकार जिसने सबसे ज्यादा गेंद मार कर अधिकाधिक अंक अर्जित किए क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय या वही विजेता घोषित होगा। उल्लेखनीय है, कि खेलनें वाले सभी खिलाड़ी एक निर्धारित वर्ग 10×10 फुट के खाने में यह खेल खेलते हैं और विपक्षी पक्ष चोर द्वारा मारने वाली रबड़ गिप्पल से बचने का प्रयास करते हैं। यदि वर्ग से बाहर या वर्ग की बाउंड्री टच हो गई तो वह खिलाड़ी आउट घोषित होते हैं। इस प्रकार अंतिम बचा खिलाड़ी विजेता घोषित होगा।

दो लकड़ी का डेंगा

- यह लकडी से बनाया जाता है।
- यह बरसात के मौसम में कीचड पर चलने के लिए बनाया जाता है।
- इसकी लम्बाई 6 फिट होती है।
- इसमें एक आदमी चल सकता है।
- इसमें पायदान नीचे से डेढ़ फिट पर दोनों बांस में लगायी जाती है। दो लकड़ी की होती है।
- जो भी सझम व्यक्ति होता है वह इसमें चल सकता है।
- इसमें चलने के लिए हाथ से बैलेंस बनाया जाता है, और पैंर आगे की ओर बढाते है।
- इसमें पायदान की लम्बाई 1 फिट होती है।
- ये मजबूत लकडी का बनाया जाता है।
- यह एक जोडी होता है।
- बांस पर खड़े होकर चलने का यह खेल बहुत ही रोचक होता है जो पहले चलकर अपने निर्धारित लक्ष्य पर पहुँच जाता है। वही विजेता होता है।

पाँसे (चौपड)

- यह कपड़े का बना होता है। जिसे गाँव की कोई निरवंशी महिला बनाती है।
- इसमें चार लोग खेलते है और प्लस के आकार के चार खाने होते है।
- इसमें 16 गोटी ओ 3 पासें होते है गोटी अलग–अलग रंग की होती है।
- पासे में 1 से 8 तक गिनती होती है।
- पासे मे जितनी गिनती गिरती है उतनी गिनती गोटी आगे बढ जाती है।
- गोटी मारने के लिए आगे जितने नम्बर पर गोटी रखी होती है उतने नम्बर पासे में आने पर पहली गोटी मर जाती है।
- इसमें 96 खाने होते है।
- विजय पाने के लिए गोटी अगर नही मरती है तो गोटी विजय हो जाती है।
- इसको खेलने में बहुत आनन्द आता है।
- यह खेल राजा महाराजाओं का प्राचीन खेल है। महाभारत काल में कौरवों का मामा शकुनी इस खेल का महारथी था।
- इसमें पासे (शेर, हिरन, हाथी) जानवरों की हडडियों से बनाते है।
- इसमें गोटी नीचे समतल और ऊपर गोल होती है।
- पासे चौकोर और लम्बे बने होते है।
- इसकी गोटी कन्हर पेड की बनायी जाती है।
- इसमें एक खाने पर दो गोटी रखी है तो एक गोटी उसे नहीं मार सकती। उसें दो गोटी एक साथ होने पर सकती हैं। इसे जुग कहतें हैं।

चप्पल चोर

इस खेल में सभी बच्चे अपनी–अपनी चप्पले इकटठा करते है और एक दूसरे के उपर रख कर ढेर बनाते हैऔर इसके बीच में जमीन में छोटा सा गडढा करके उसमे डण्डा लगाकर एक बालक निगरानी करता है। और बाकी बच्चे बडी चतुराई और चपलता के साथ चप्पलों को ढेर से से इस प्रकार चप्पल चुराने व निकालने का प्रयास करते है कि निगरानी करने वाला बच्चा बिना डण्डा हटाये इन्हे छू न सकें क्योंकि जिसको वह छू कर डण्डे के नीचे बनाए गए गडढे को हाथ लगा कर हाथ से चूम लेगा तो वह जीत जायेंगा। टीम आउट हो जायेगी। और यदि वह निगरानी करते–करते बच्चे सारी चप्पल चुरा लिए और वह उसमें से किसी को भी छू न पाया तो हारा माना जायेगा। इसमें चप्पलों को हाथ, पैर या चुराई गई चप्पलों को मार कर चुराई (निकाली) जाती है।

चुंगी

रबर के टयूब को काटकर छल्ले बनाकर उन्हे एक साथ बॉध दिया जाता है इसे चुंगी कहते है। इसमें चुंगी को खिलाडी हवा में ऊचा उछालता है और नीचे आती हुई चुंगी को पैर से पुश करके वापस हवा में उछालता रहता है और इस प्रकिया में पैर से मारे हर पुश को गिनता जाता है। यह क्रिया चुंगी के जमीन पर गिरने तक जारी रहती है। इस प्रकार बिना भूमि पर गिरे सर्वाधिक उछाल करने वाले खिलाड़ी को विजेता घोषित करते हैं और इसमे चुंगी को एक बार आगे पैर से उछालकर और नीचे आने पर पैर से पीछे की ओर मारा जाता है और चुंगी जितने दूर गिरती है और उस दूरी को पैर की एडी द्वारा मापा जाता है और सेट अंक तक ऐडी की गिनती नही पहुची है तो दोबारा ऐसी नम्बर आने पर यही प्रयास किया जाता है। यह खेल एकाग्रता व सन्तुलन का बेहतरीन नमूना है। थारू बच्चों में यह खेल बहुत लोकप्रिय है।

लच्छे डाडी (लपटू डंडा की तरह)

- इसमें बच्चो का समूह होता है उसी समूह में से एक बच्चे को चोर बनाया जाता है।
- इस खेल में दो छोटी ड़ेढ फुट की डंडी होती है। यह दोनो डंडी क्रास के रूप में रखी जाती है।
- चोर को छोडकर सारे लड़के पेड़ की टहनियो पर चढ़ जाते है और चोर बाद में उन्हे पकड़ता है। यदि चोर उन्हें पकड़ कर नीचे आ कर एक डंडे को अपने पैर के नीचे से फैक देता है। तो चोर ने जिस लड़के को पकडा था वही लड़का चोर बनेगा।
- यदि चोर ने जिस बच्चे को पकडा था वह बच्चा नीचे आकर एक डंडे को अपने पैर से नॉघ देता है तो पहले वाला चोर ही चोर बना रहेगा।
- यह खेल दो पक्षों में भी खेला जाता है।

अट्टी डंडा (गिल्ली डंडा)

- इस खेल में एक डंडा और एक गिल्ली होती है।
- डंडे का साइज 2.5 फिट और गिल्ली का साइज 06 इंच लगभग होता है। गिल्ली दोनों ओर से नुकीली लकड़ी की होती है।
- इसमें एक गढ्ढा होता है जिसकी लंबाई गिल्ली से छोटी होती है।
- इस खेल में टॉस के रूप में गिल्ली को गढ्ढे के ऊपर रखकर गिल्ली को डंडे से मारकर /उछाल कर फिर ऊपर ही ऊपर डंडे से गिल्ली को मारा जाता है। जिसकी गिल्ली ज्यादा दूर जायेगी वह लड़का आगे खेलेगा।
- गिल्ली को डंडे के ऊपर तिरछा रखकर डंडे को गिल्ली के नीचे गढ्ढे में रखकर रेडी बोलकर आगे फेंका जाता है। उसके बाद दूसरा लड़का गिल्ली पकड़कर वही से डंडे में मारता है। यदि गिल्ली डंडे पर लग जाती हे तो दूसरे लड़के की बाजी (नम्बर) आ जाता है।
- यदि गिल्ली डंडे पर नही लगती है तो पहला वाला लड़का उस डंडे से गिल्ली को मार कर दूर फेंकता है। गिल्ली जितनी दूर जा गिरेगी वही से डंडा गिना जाता है, गढ्ढे तक जितना गढ्ढा होता है उस लड़के के उतना ही नम्बर हो जाता है
- नम्बर पहले ही तय कर लिया जाता है।
- जो बच्चा पहले इस नम्बर तक पहुँचता है वही विजयी हो जाता है।

मारिक मरोहा

- इस खेल में गोले के बीच में सभी बच्चे एकत्रित होते हैं और एक बच्चे को चोर चुनते हैं। इसके बाद सभी एक दूसरें को गेंद से मारने का प्रयास करते है। जिसको गेंद लगेगी वह बच्चा दूसरे बच्चे को गेंद से मारेंगा। खेल के दौरान जो बच्चा निर्धारित गोले के बाहर जायेगा वह आऊट माना जायेंगा।
- गेंद पुराने कपड़े या मोजे आदि से घर में ही बनाई जाती है।

पारंम्परिक थारू नृत्य

इस प्रकार नृत्य राजा समुदाय के द्वारा अक्सर वैवाहिक अवसरों पर या होली के अवसर पर 10–15 दिन तक अनवरत किए जाते हैं। महिलाएं और बालिकाओं का समूह तीखे रगं–बिरंगे कपड़े पहनकर हाथों में सुन्दर रिबन लेकर दो समूहों में नृत्य में प्रारम्भ में 6 से 9 नर्तक होते हैं, परन्तु धीरे–धीरे नर्तकों की संख्या बढ़ती जाती है– जिसमें वे कभी पंक्तिबद्ध हो कर तो कभी वर्गाकर, कभी अर्धचन्द्राकर तथा कभी–कभी दो लाइनों में बंट कर आयत में बिना छुए एक दूसरे को क्रास करते हुए धीमी गति से नृत्य करते है, यही इस नृत्य की मुख्य विशेषता हैं। नृत्य का प्रारंम्भ दाहिने पैर के निकालने से प्रारम्भ होता है उसके पश्चात गायक व ढोल बजाने वाले के अनुसार सभी नर्तक अपने–अपने कदम व ताल को मिलाकर गतिमान रहते हैं। पहले कंघा थिरकता है, फिर कमर थिरकती है, फिर हाथ व पैर थिरकते है। हाथ व पैर के साथ में सिर भी झूमता है। इस समूह नृत्य के प्रमुख नर्तक की भिन्न–भिन्न भाव भंगिमा के आधार पर बाकी सभी नर्तक अपनी कला का झूम–झूम कर प्रदर्शन करते हैं।

थारू समाज के इस पारंम्परिक नृत्य में एक तरफ लड़का एक तरफ लड़की अथवा एक तरफ पाँच लड़कें दुसरी तरफ पाँच लड़की होती हैं। नृत्य स्थल पर एक ढोल बजाता है और एक कैसियो बजाता है एक गीत गाने वाले होता है और नृत्य वेशभूषा में घघरिया पहनते है और अगिया, पैड़ा एवं चाला और नारा एवं फीता और विल्ला और उुन्नीया और गुरखा चुरिया, फतुाई तथा पैर में पैड़ा पहनते है। थारू नृत्य एवं होली डांस किया जाता है। यह थारू पूर्वजों की परम्परा से होता चला आ रहा हैं।

हाथों और पैरों के वडताल के साथ सायं काल किया जाता है। डांस की यह पद्धति धीमी होती है जिसमें कदमताल का विशेष ध्यान रखते है कि लय बिगड़ने न पाये। मुख्य सबसे पुरूष नर्तक के साथ अन्य सभी नर्तक पांरम्परिक पहनावे के साथ पूरे शरीर को प्रादर्शित करते है। इस नृत्य के कुछ मुख्य कलाकारों के मोबइल नम्बर नीचे दिये जा रहे हैं :–

मुख्य नतृक :– राम गोविन्द राज – 8948459284
सहायक नतृक :– सलमान – 7876822150
बैंजों वादक :– रामदास – 8707558074

इस प्रकार थारू नृत्य में नर्तक सामूहिक रूप से कंघो, पैरों, हाथों और भाव भंगिमा के आधार पर स्लो मोशन में नृत्य करतें हैं। देखने में इनका यह नृत्य बहुत सुन्दर, आकर्षक व भावपूर्ण लगता हैं । स्लो मोशन व पहनावे के कारण इस नृत्य का आर्कषण और बढ़ जाता है।